अतिरिक्त भाग

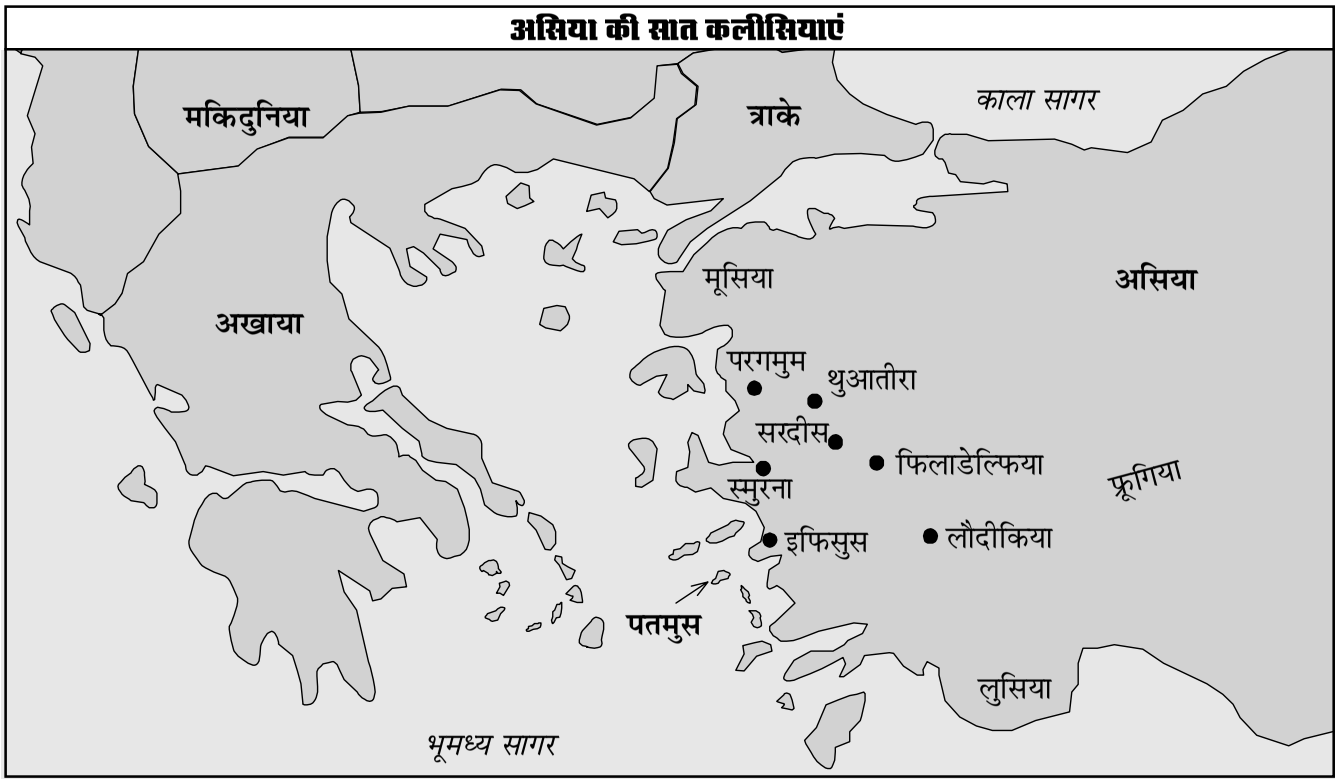
असिया की सात कलीसियाएं
मकिदुनिया
त्राके
काला सागर
मूसिया
असिया
अखाया
परगमुम
थुआतीरा
सरदीस
फिलाडेल्फिया
फ्रूगिया
स्मुरना
इफिसुस
लौदीकिया
पतमुस
लुसिया
भूमध्य सागर

प्रकाशितवाक्य में प्रयुक्त सांकेतिक अंक

1 = एक इकाई (केवल एक)
2 (1 + 1) = दृढ़
3 = ईश्वरीय अंक
3½ (7 का आधा) = अधूरा (42 महीने; 1,260 दिन; ''एक समय और समयों, और आधा समय''=परीक्षा का 3½ वर्ष का समय, भविष्य की आशा देते हुए)
4 = सृष्टि का अंक (वैश्विक अंक, मनुष्य जाति)
5 (10 का आधा) = सीमित सामर्थ
6 (7 − 1) = अपूर्ण (दुष्ट, छल, असफलता)
7 (3 + 4) = पूर्णता (पवित्र सम्पूर्णता)
10 = मानवीय सम्पूर्णता (परिपूर्णता या सामर्थ)
12 (3 × 4) = धार्मिक सम्पूर्णता
24 (2 × 12) = धार्मिक सम्पूर्णता का बढ़ना
40 (4 × 10) = मानवीय स्तर पर सम्पूर्णता
42 (देखें 3½)
144 (12 × 12) = धार्मिक सम्पूर्णता की सम्पूर्णता
666 (देखें 6) = अपूर्णता, दुष्ट, छल और असफलता का बढ़ना
1,000 (10 × 10 × 10) = सम्पूर्णता की सम्पूर्णता की सम्पूर्णता
1,260 (देखें 3½)
1,600 (4 × 4 × 10 × 10) = मानवीय स्तर पर पूर्णता
7,000 (7 × 1,000) = सम्पूर्णता का बढ़ना
12,000 (12 × 1,000) = सम्पूर्णता का बढ़ना
1,44,000 (144 × 1,000) = सम्पूर्णता का बढ़ना
20,00,00,000 (2 × कई 10) = अजेय सामर्थ
1,00,00,00,000 और अधिक = असंख्य, मानवीय समझ से परे